शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०४-२०१९

वर्ष - ३० अंक - ४ अप्रैल २०१९ विक्रम संवत् २०७५-७६ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

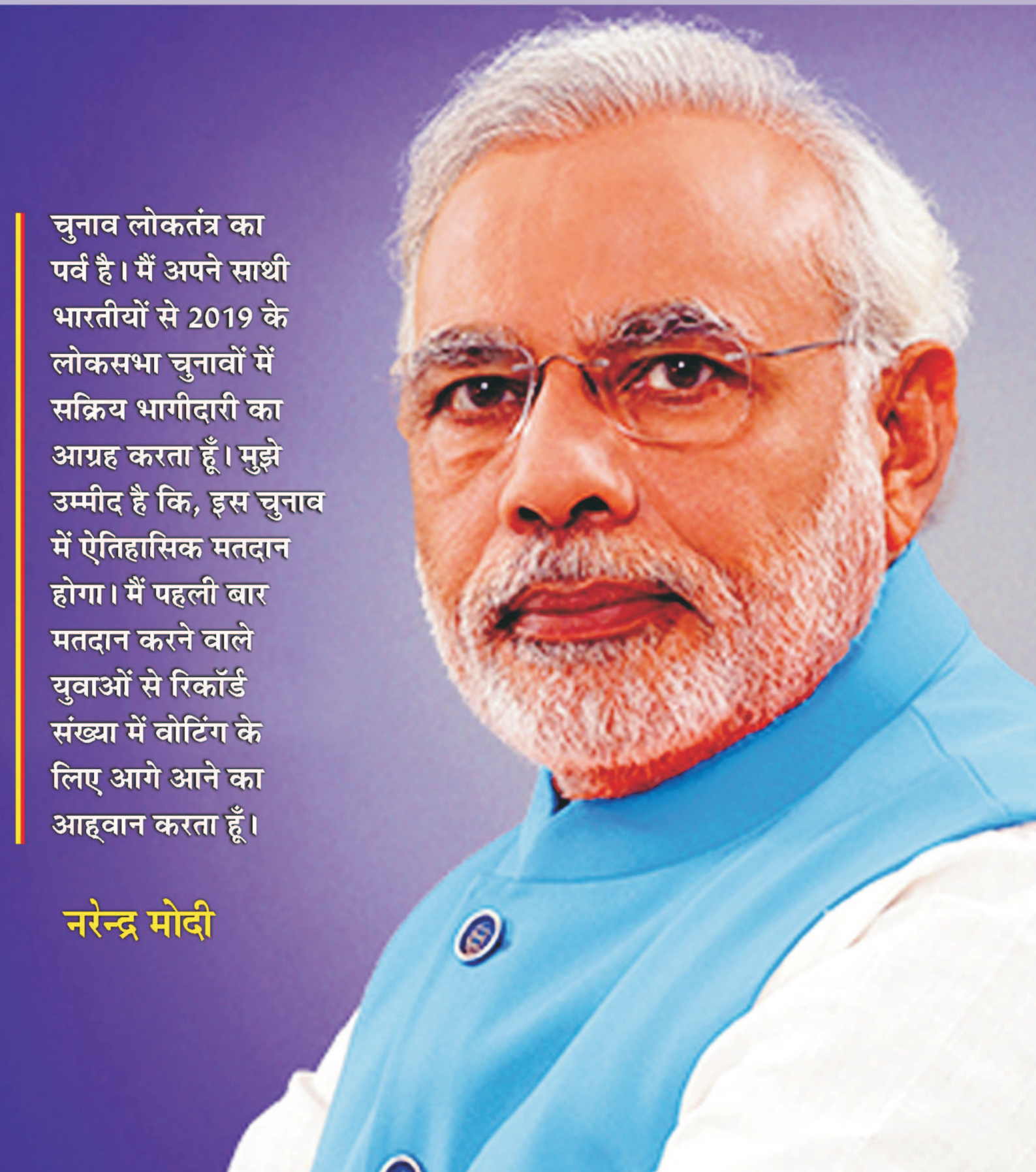

चुनाव लोकतंत्र का पर्व है। मैं अपने साथी भारतीयों से 2019 के लोकसभा चुनावों में सक्रिय भागीदारी का आग्रह करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि, इस चुनाव में ऐतिहासिक मतदान होगा। मैं पहली बार मतदान करने वाले युवाओं से रिकॉर्ड संख्या में वोटिंग के लिए आगे आने का आह्वान करता हूँ।

नरेन्द्र मोदी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अ.भा. प्रतिनिधि सभा, ग्वालियर – 08 से 10 मार्च 2019

विश्व हिन्दू परिषद, धर्म संसद अधिवेशन, प्रयागराज 01 फरवरी 2019

विश्व शान्ति ब्रह्मयज्ञ वार्षिक महिमा मेला – गरियाबन्द (काण्डसर) 14 से 21 मार्च 2019

दिव्यांगजनों के बीच कार्यरत ''सक्षम'' संस्था द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग, रायपुर 10-02-2019

सुभाषित

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं च धनम्।
कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद् धनम्।।

अर्थात्– पुस्तक में रखी विद्या तथा दूसरे के हाथ में गया धन—ये दोनों ही जरूरत के समय हमारे किसी भी काम नहीं आया करते।

संपादकीय

देशकाल परिस्थितियों में बदलते घटनाक्रमों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ निरंतर चिंतन मनन करते रहता है। इस वर्ष भी ग्वालियर में संपन्न हुई प्रतिनिधि सभा में 2 प्रस्ताव पारित किए गए और 3 वक्तव्य जारी किए गए हैं। अपने सुधी पाठकों के लिए यह प्रस्ताव और वक्तव्य इस पत्रिका में प्रकाशित किया गया है।

एक ओर माओवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद और रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठ को समूल नष्ट करने के लिए पूरी शक्ति लगाकर सही दिशा में प्रयत्न हो रहे हैं, तो दूसरी ओर वे सारी ताकतें एक साथ है जो आतंकवादियों को बचाने के लिए आधी रात को सर्वोच्च न्यायालय खुलवाती हैं। मानवाधिकारों के नाम पर नक्सलवादी और आतंकवादियों का संरक्षण करती है। आतंकवादी अफजल गुरु को बचाने के समर्थन में खड़ी होती हैं और ''भारत तेरे टुकड़े होंगे....'' के नारे लगाती हैं।

देश की गत चार-पांच वर्षों में रक्षा, विदेश और आर्थिक आदि नीतियों के कारण दुनिया में भारत का गौरव बढ़ा है। दुनिया भारत का नेतृत्व स्वीकार करने लगी हैं। पहली बार प्रयागराज कुम्भ मेला की भव्यता, दिव्यता और स्वच्छता को देखकर तथा नेत्र-कुम्भ जैसे सामाजिक आयोजनों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है।

इस समय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का चुनाव पर्व चल रहा है। लोकतंत्र के इस महापर्व पर देशहित को ध्यान में रखते हुए शत-प्रतिशत मतदान कर अपनी प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करें।

ए महिना के तिहार

ए महिना के तिहार मन म नवा साल, वर्ष प्रतिपदा छह तारीक के हवय, उही दिन ले चैत्र नवरात्री सुरु होही। रामनवमी तेरा तारीक के अऊ हनुमान प्रकटोत्सव उन्नीस तारीक के हवय। महिना के पहिली एकादसी (पापमोचिनी) एक तारीक के, दूसर एकादसी (कामदा) पन्द्रा तारीक के अऊ तीसर एकादसी (वरूथिनी) तीस तारीक के परिही।

पापमोचिनी एकादशी	**चैत्र कृ. 11**	**01 अप्रैल**
वर्ष प्रतिपदा (चैत्र नवरात्रि प्रारंभ)	**चैत्र शु. 01**	**06 अप्रैल**
श्रीराम नवमी	**चैत्र शु. 09**	**13 अप्रैल**
कामदा एकादशी	**चैत्र शु. 11**	**15 अप्रैल**
श्री हनुमान प्रकटोत्सव	**चैत्र शु. 15**	**19 अप्रैल**
वरूथिनी एकादशी	**वैशाख कृ. 11**	**30 अप्रैल**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग घनश्यामदास बिड़ला के जयंती दस तारीक के हवय। हमर राष्ट्रगीत के लिखइया बंकिमचंद्र चटर्जी के पुण्यतिथि आठ तारीक, जुन्ना माई मंतरी मोरारजी देसाई के दस तारीक, फणीश्वर नाथ 'रेणु' के ग्यारह तारीक, बड़का इंजीनियर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया के चौदह तारीक, जुन्ना राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के सत्रह तारीक अऊ कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के पुण्यतिथि चौबीस तारीक के घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म सात तारीक के विश्व स्वास्थ्य दिवस, तेरह तारीक के जलियांवाला बाग दिवस, बाईस तारीक के अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस, अऊ तेईस तारीक के विश्व पुस्तक दिवस मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार - जय माँ भारती।

संकल्प सफलता का

केरल के एर्नाकुलम जिले के पुरथेनक्रुज कस्बे में रहने वाली शिखा सुरेंद्रन की आंखों में बड़े-बड़े सपने थे। पिता बिस्तर पर थे व मां मजबूर। रिश्तेदारों की मदद से किसी तरह इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर चुकी यह प्रतिभाशाली युवती आईएएस बनकर देश की सेवा करना चाहती थी, किन्तु दिल्ली में रहकर, कोचिंग करना बिना पैसों के कहां संभव था, तभी वो **संकल्प** के संपर्क में आयी। संघ के प्रचारक रहे संतोष तनेजा जी के प्रयासों से 1986 में शुरु हुई यह संस्था प्रतिभाशाली छात्रों को दिल्ली में सिविल सर्विस की कोचिंग देती है। यहां शिखा को नाममात्र की फीस पर कोचिंग के साथ ही हॉस्टल में रहने की सुविधा मिली व उसने इतिहास रच दिया। 2017-18 की बैच में शिखा सुरेंद्रन ने आईएएस में ऑल इंडिया में 16वीं रैंक हासिल की।

कुछ इससे मिलती जुलती कहानी राजस्थान के अलवर जिले के गांव रोनिजाजाट के किसान परिवार के राजीव कुमार की है, जिनके परिवार में कोई भी व्यक्ति पढ़ा-लिखा नहीं है, आज वे भी सिविल सेवा में चयन के बाद मसूरी में आईएएस की ट्रेनिंग ले रहे हैं व अपनी सफलता का श्रेय संकल्प परिवार को देते हैं।

संकल्प हर साल 20 ऐसे छात्रों को फ्री कोचिंग देता है, जिनकी प्रतिभा की राह में धन की कमी आड़े आती है। विशेषकर ट्राईबल व पूर्वोत्तर के निर्धन छात्रों के लिए संकल्प उस परिवार की तरह है जो उनके लिए पालक व गुरु की दोहरी भूमिका निभाता है।

परीक्षा की तैयारी

सुबह के योगाभ्यास, शाम को शाखा से लेकर रात्रि की प्रार्थना तक एक अनुशासित संस्कारमय दिनचर्या संकल्प को बाकी कोचिंग संस्थानों से अलग करती है। स्पेशल लेक्चर की सीरिज में कश्मीरियों को शिक्षा से जोड़ने वाले मेजर जनरल पी.के. सहगल व श्री श्री रविशंकर जैसे राष्ट्रवादी व्यक्तियों के अनुभव छात्रों को देश के प्रति जिम्मेदार बनने की प्रेरणा देते हैं। संस्था के संस्थापक संतोष जी की मानें तो 1986 में संकल्प की स्थापना देश के लिए राष्ट्रवादी प्रशासनिक अधिकारी गढ़ने के उद्देश्य से ही की गई थी।

प्रेरक प्रसंग

श्रम का महत्व

एक बार नेपोलियन बोनापार्ट अपनी पत्नी के साथ संध्या के समय घूमने निकला। वे एक सकरे रास्ते से गुजर रहे थे कि एक लकड़हारा सिर पर बोझा उठाये आता दिखाई दिया। जब वह बिल्कुल समीप आ गया, तो नेपोलियन ने अपनी पत्नी को संकेत से हटने के लिए कहा और उसने स्वयं भी रास्ता छोड़ दिया।

पत्नी राजसी स्वभाव की थी, उससे रहा न गया। झुंझलाकर बोली, ''एक तो इस उदण्ड ने हमें अभिवादन तक नहीं किया और फिर इस नीच को आपने रास्ता भी दे दिया।'' नेपोलियन ने गंभीर स्वर में कहा, ''देवीजी! आप श्रम का महत्व नहीं जानती, इसीलिए आप श्रम को ऐश्वर्य से तुच्छ समझ रही हैं। ध्यान रखो, श्रम का अभिवादन सम्राट के अभिवादन से अधिक महत्वपूर्ण होता है!''

पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन की दिशा में संगठित व योजनाबद्ध रूप से कार्य करेगा संघ - भैयाजी जोशी

निश्चित प्रारूप में और निश्चित स्थान पर ही बनेगा राम मंदिर

ग्वालियर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने ग्वालियर में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा के अंतिम दिन प्रेस वार्ता में कहा कि बैठक में संघ कार्य की समीक्षा और समसामयिक विषयों पर चिंतन किया गया। संघ ने इस बार पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में कार्य करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही सामाजिक समरसता पर और अधिक प्रभावी रूप से कार्य करने का आग्रह स्वयंसेवकों से किया है। उन्होंने कहा कि संघ कार्य एक मोड़ पर पहुंच चुका है, अब कार्य विस्तार की दृष्टि से एक बड़ी छलांग लेने की आवश्यकता है।

भैयाजी ने बताया कि प्रतिनिधि सभा की बैठक में सबरीमाला मंदिर प्रकरण को लेकर प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही श्री गुरुनानकदेव जी के 550वें प्रकाश पर्व और जलियांवाला बाग के प्रेरणादायी बलिदान की शताब्दी पर वक्तव्य जारी किया है।

उन्होंने कहा कि संघ ने इस बार एक नया विषय हाथ में लिया है। आज विश्व के समक्ष पर्यावरण प्रदूषण विकट समस्या के रूप में उपस्थित है। संघ पर्यावरण संरक्षण हेतु देशभर में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कार्य करेगा। इसमें जलसंवर्धन, वृक्षारोपण और प्लास्टिक-थर्मोकोल मुक्त पर्यावरण के प्रयास में समाज को साथ लेकर कार्य करेगा। वैसे तो संघ के स्वयंसेवक अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में शामिल हैं और समाज में जागृति भी आ रही है। लेकिन अब संघ संगठित व योजनाबद्ध रूप से कार्य करेगा।

राम मंदिर पर पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में सरकार्यवाह जी ने कहा कि राम मंदिर निर्माण को लेकर हमारी भूमिका निश्चित है। अयोध्या में राम मंदिर बनेगा, निश्चित स्थान पर बनेगा और निर्धारित प्रारूप में ही बनेगा। मंदिर बनने तक यह आंदोलन जारी रहेगा। न्यायालय द्वारा मध्यस्थता समिति के गठन को लेकर कहा कि संघ ऐसे किसी भी प्रयास का स्वागत करता है। न्यायालय और सरकार से संघ की अपेक्षा है कि मंदिर निर्माण की बाधाओं को शीघ्रातिशीघ्र दूर किया जाए। ऐसी अपेक्षा है कि समिति के सदस्य हिन्दू भावनाओं को समझकर आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि सत्ता संचालन में बैठे लोगों का राम मंदिर को लेकर विरोध नहीं है और उनकी प्रतिबद्धता को लेकर भी कोई शंका नहीं है।

पुलवामा हमले के पश्चात् आतंकी शिविरों पर एयर स्ट्राइक को उन्होंने सरकार व वायु सेना का सराहनीय कदम बताया। उन्होंने कहा कि पुरुषार्थी और साहसी देश इसी भाषा में आतंकियों को जवाब देते हैं। धारा 370 से संबंधित प्रश्न पर कहा कि अभी 35ए को लेकर मामला न्यायालय में विचाराधीन है। अपेक्षा है कि सरकार अधिक प्रखरता के साथ न्यायालय में पक्ष रखेगी और इस पर निर्णय आने के बाद धारा 370 पर कोई निर्णय होगा।

चुनाव में संघ की भूमिका से संबंधित प्रश्न पर भैयाजी ने कहा कि संघ की भूमिका स्पष्ट है। लोकतंत्र में मतदान के प्रति जागरूकता लाना तथा 100 प्रतिशत

(शेष पृष्ठ १३ पर)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अ.भा. प्रतिनिधि सभा, ग्वालियर म.प्र.

प्रस्ताव-1 - भारतीय परिवार व्यवस्था - मानवता के लिए अनुपम देन

परिवार व्यवस्था हमारे समाज का मानवता को दिया हुआ अनमोल योगदान है। अपनी विशेषताओं के कारण हिन्दू परिवार व्यक्ति को राष्ट्र से जोड़ते हुए वसुधैव-कुटुम्बकम् तक ले जाने वाली यात्रा की आधारभूत इकाई है। परिवार व्यक्ति की आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था के साथ-साथ नई पीढ़ी के संस्कार निर्मिति एवं गुण विकास का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दू समाज के अमरत्व का मुख्य कारण इसका बहुकेन्द्रित होना है एवं परिवार व्यवस्था इनमें से एक सशक्त तथा महत्वपूर्ण केन्द्र है।

आज हमारी परिवार रूपी यह मंगलमयी सांस्कृतिक धरोहर बिखरती हुई दिखाई दे रही है। भोगवादी मनोवृत्ति एवं आत्मकेन्द्रितता का बढ़ता प्रभाव इस पारिवारिक विखंडन के प्रमुख कारण हैं। आज हमारे संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित होने लगे हैं। भौतिकतावादी चिन्तन के कारण समाज में आत्मकेन्द्रित व कटुतापूर्ण व्यवहार, असीमित भोग-वृत्ति व लालच, मानसिक तनाव, सम्बंध विच्छेद आदि बुराइयाँ बढ़ती जा रही हैं। छोटी आयु में बच्चों को छात्रावास में रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिवार के भावनात्मक संरक्षण के अभाव में नई पीढ़ी में एकाकीपन भी बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप नशाखोरी, हिंसा, जघन्य अपराध तथा आत्महत्याएँ चिन्ताजनक स्तर पर पहुँच रही हैं। परिवार की सामाजिक सुरक्षा के अभाव में वृद्धाश्रमों की सतत वृद्धि चिंताजनक है।

अ.भा. प्रतिनिधि सभा का यह स्पष्ट मत है कि अपनी परिवार व्यवस्था को जीवंत तथा संस्कारक्षम बनाए रखने हेतु आज व्यापक एवं महती प्रयासों की आवश्यकता है। हम अपने दैनन्दिन व्यवहार व आचरण से यह सुनिश्चित करें कि हमारा परिवार जीवनमूल्यों को पुष्ट करने वाला, संस्कारित व परस्पर संबंधों को सुदृढ़ करने वाला हो। सपरिवार सामूहिक भोजन, भजन, उत्सवों का आयोजन व तीर्थाटन; मातृभाषा का उपयोग, स्वदेशी का आग्रह, पारिवारिक व सामाजिक परम्पराओं के संवर्धन व संरक्षण से परिवार सुखी व आनंदित होंगे। परिवार व समाज परस्पर पूरक हैं। समाज के प्रति दायित्वबोध निर्माण करने के लिए सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक कार्यों हेतु दान देने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के यथासम्भव सहयोग के लिए तत्पर रहना हमारे परिवार का स्वभाव बने।

हमारी परिवार व्यवस्था की धुरी माँ होती है। मातृशक्ति का सम्मान करने का स्वभाव परिवार के प्रत्येक सदस्य में आना चाहिए। सामूहिक निर्णय हमारे परिवार की परंपरा बननी चाहिए। परिवार के सदस्यों में अधिकारों की जगह कर्तव्यों पर चर्चा होनी चाहिए। प्रत्येक के कर्तव्य-पालन में ही दूसरे के अधिकार निहित हैं।

कालक्रम से अपने समाज में कुछ विकृतियाँ व जड़ताएँ समाविष्ट हो गई हैं। दहेज, छुआछूत व ऊँच-नीच, बढ़ते दिखावे एवं अनावश्यक व्यय, अंधविश्वास आदि दोष हमारे समाज के सर्वांगीण विकास की गति में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण समाज से यह अनुरोध करती है कि अपने परिवार से प्रारंभ कर, इन कुरीतियों व दोषों को जड़मूल से समाप्त कर एक संस्कारित एवं समरस समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करें।

समाज निर्माण की दिशा में पूज्य साधु-सन्तों एवं धार्मिक-सामाजिक-शैक्षणिक-वैचारिक संस्थाओं की सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रतिनिधि सभा इन सबसे भी अनुरोध करती है कि वे परिस्थिति की गंभीरता को समझकर परिवार संस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें। प्रसार के विभिन्न माध्यम समाज को संस्कारित करने का एक प्रभावी साधन हो सकते है। इन क्षेत्रों से सम्बंधित विभिन्न विधाओं के महानुभावों से यह सभा निवेदन करती है कि वे सकारात्मक संदेश देने

(शेष पृष्ठ ७ पर)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अ.भा. प्रतिनिधि सभा, ग्वालियर म.प्र.

प्रस्ताव-2 - हिन्दू समाज की परम्पराओं व आस्थाओं के रक्षण की आवश्यकता

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि अभारतीय दृष्टिकोण के आधार पर हिन्दू आस्था और परम्पराओं को आहत एवं इनका अनादर करने का एक योजनाबद्ध षड्यंत्र निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा चलता आ रहा है। शबरीमला मंदिर प्रकरण इसी षड्यंत्र का नवीनतम उदाहरण है।

हिंदुत्व ईश्वर के एक ही स्वरूप अथवा पूजा पद्धति को स्वीकारने तथा अन्यों को नकारने वाला विचार नहीं है, अपितु संस्कृति के विविध विशेष रूपों में अभिव्यक्त होने वाला जीवन दर्शन है। इसका अनूठापन विविध पूजा पद्धतियों, स्थानीय परम्पराओं व उत्सव, आयोजनों से प्रकट होता है। हमारी परम्पराओं में विद्यमान विविधता के सौंदर्य पर नीरस एकरूपता को थोपना असंगत है।

हिन्दू समाज ने अपनी प्रथाओं में काल और आवश्यकता के अनुरूप सुधारों का सदैव स्वागत किया है, परन्तु ऐसा कोई भी प्रयास सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व के मार्गदर्शन में ही होता रहा है और आम सहमति के मार्ग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती रही है। केवल विधिक प्रक्रियाएँ नहीं, अपितु स्थानीय परम्पराएँ व स्वीकृति सामाजिक व्यवहार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सम्पूर्ण हिन्दू समाज आज एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना कर रहा है। केरल की सत्तारूढ़ वाम मोर्चा सरकार, माननीय उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ द्वारा पवित्र शबरीमला मंदिर में सभी आयुवर्ग की महिलाओं को प्रवेश के आदेश को लागू करने की आड़ में हिन्दुओं की भावनाओं को कुचल रही है।

शबरीमला की परंपरा देवता और उनके भक्तों के बीच में अनूठे संबंधों पर आधारित है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि न्यायालय ने निर्णय तक पहुँचते हुए सैंकड़ों वर्षों से चली आ रही समाज स्वीकृत परंपरा की प्रकृति और पृष्ठभूमि का विचार नहीं किया; धार्मिक परम्पराओं के प्रमुखों के विचार जाने नहीं गए; महिला भक्तों की भावनाओं की भी अनदेखी की गई। समग्र विचार के अभाव में स्थानीय समुदायों द्वारा सदियों से स्थापित, संरक्षित और संवर्धित वैविध्यपूर्ण परम्पराओं को इससे ठेस पहुँची है। केरल की मार्क्सवादी नीत सरकार के कार्यकलापों ने अय्यप्पा भक्तों में मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया है। नास्तिक, अतिवादी वामपंथी महिला कार्यकर्ताओं को पीछे के दरवाजे से मंदिर में प्रवेश करवाने के राज्य सरकार के प्रयत्नों ने भक्तों की भावनाओं को बहुत आहत किया है।

सीपीएम अपने क्षुद्र राजनैतिक लाभ एवं हिन्दू समाज के विरुद्ध वैचारिक युद्ध का एक अन्य मोर्चा खोलने के लिए यह कर रही है। यही कारण है कि अय्यप्पा भक्तों, विशेषकर महिला भक्तों द्वारा अपनी धार्मिक स्वतंत्रताओं और अधिकारों की रक्षा के लिए एक स्वत:स्फूर्त और अभूतपूर्व आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी भक्तों की सामूहिक भावनाओं का हृदयपूर्वक सम्मान करती है और मंदिर परम्पराओं की रक्षा हेतु संयम तथा शालीनता से संघर्षरत रहने का आह्वान करती है। प्रतिनिधि सभा केरल सरकार से आग्रह करती है कि श्रद्धालुओं की आस्था, भावना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों का आदर करे और अपनी ही जनता पर अत्याचार न करे। प्रतिनिधि सभा आशा करती है कि उच्चतम न्यायालय इस विषय में दायर पुनर्विचार व अन्य याचिकाओं पर सुनवाई करते समय इन सब पहलुओं का समग्रतापूर्वक विचार करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा देश के लोगों से शबरीमला बचाओ आन्दोलन को हर प्रकार से समर्थन देने का आह्वान करती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अ.भा. प्रतिनिधि सभा, ग्वालियर म.प्र.

वक्तव्य-1 - युवा पीढ़ी तक पहुँचाना है आजाद हिन्द सरकार का इतिहास

प्रतिनिधि सभा में सरकार्यवाह जी के वक्तव्य के बारे में श्री दत्तात्रेय जी होसबले ने कहा कि, 21 अक्टूबर 1943 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा निर्वासन में आजाद हिन्द सरकार का गठन किया था जिसके 75 वर्ष पूर्ण हुए हैं। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में इस घटना का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। दिसम्बर 1943 में जापान की नौसेना द्वारा जीते गए अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिए गए थे। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने इन द्वीप समूहों के नाम शहीद व स्वराज रखकर तथा वहां 30 दिसम्बर 1943 को राष्ट्रध्वज फहराकर अपना स्वतंत्र क्षेत्राधिकार घोषित किया था। इनके कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक विधिसम्मत सरकार के रूप में सुपुष्ट आधार प्राप्त हुआ था। इन सारे कार्यों से अंग्रेजी सेना के भारतीय सैनिकों तथा आम जनता में देशभक्ति की लहर उठी, जिससे स्वाधीनता संग्राम को एक निर्णायक मोड़ प्राप्त हुआ।

वक्तव्य के अनुसार, ''इस ऐतिहासिक घटनाचक्र की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आजाद हिन्द सरकार, नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा आजाद हिन्द सेना के हजारों सैनिकों के योगदान का हम कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हैं। इस प्रेरणादायी तथा गौरवशाली इतिहास को देश के सभी नागरिकों, विशेषकर युवा पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु विविध कार्यक्रमों की योजना करें यह सभी से आह्वान है।''

वक्तव्य-2 - जलियाँवाला बाग के प्रेरणादायी बलिदान की शताब्दी

जलियाँवाला बाग हत्याकांड क्रूर, वीभत्स तथा उत्तेजनापूर्ण घटना थी, जिसने न केवल भारत के जनमानस को उद्वेलित, तथा आंदोलित किया, बल्कि ब्रिटिश शासन की नींव भी हिला दी। इसलिए हम सबका कर्तव्य है कि बलिदान की यह अमरगाथा देश के हर कोने तक पहुँचे। सम्पूर्ण समाज से यह आह्वान है कि इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन करें।

वक्तव्य-3 - श्री गुरुनानकदेव जी का 550वां प्रकाश पर्व

आज से पाँच सौ पचास वर्ष पूर्व संवत् 1526 को श्री गुरुनानकदेव जी का जन्म श्री मेहता कल्याणदास जी के घर, राय भोय की तलवण्डी में माता त्रिपता जी की कोख से हुआ था। उस समय भारतवर्ष की दुर्बल व विघटित अवस्था का लाभ उठाकर विदेशी आक्रांता इस राष्ट्र की धार्मिक व सांस्कृतिक अस्मिता को नष्ट कर रहे थे। श्री गुरुनानकदेव जी महाराज ने सत्य-ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का मार्ग दिखाकर अध्यात्म के युगानुकूल आचरण से समाज के उत्थान व आत्मोद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। जिसके फलस्वरूप भ्रमित हुए भारतीय समाज को एकात्मता एवं नवचैतन्य का संजीवन प्राप्त हुआ।

श्री गुरुनानकदेव जी महाराज ने समाज को मार्गदर्शन देने के लिए 'संवाद' का मार्ग अपनाया। उन्होंने अपने जीवन में सम्पूर्ण भारत सहित अनेक देशों की यात्राएँ कीं, जिनको 'उदासी' के नाम से जाना जाता है। प्रथम तीन यात्राएँ भारत की चारों दिशाओं में की तथा मुल्तान से लेकर श्रीलंका व लखपत (गुजरात) से लेकर कामरूप, ढाका सहित देश के सभी प्रमुख आध्यात्मिक केन्द्रों पर गए। चौथी उदासी उन्होंने भारत से बाहर की जिसमें उन्होंने बगदाद, ईरान, कंधार, दमिष्क, मिस्त्र, मक्का व मदीना तक की यात्राएँ कीं। इन यात्राओं में उन्होंने तत्कालीन धार्मिक नेतृत्व यथा सन्तों, सिद्धों, योगियों, सूफी फकीरों, जैन व बौद्ध सन्तों से संवाद किया। धार्मिकता के नाम पर प्रचलित अंधविश्वासों पर सैद्धांतिक व तार्किक दृष्टिकोण बताते हुए उन्होंने समाज का मार्गदर्शन किया।

श्री गुरुनानकदेव जी ने मतान्ध बाबर के आक्रमण के विरूद्ध मुकाबला करने का आह्वान किया। उन्होंने स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा देकर भारत की बलिदानी परम्परा को सुदृढ़ किया, जिससे आक्रान्ताओं के मार्ग सदैव के लिए बन्द हो गए। उन्होंने समाज को यह उपदेश दिया कि 'किरत कर नाम जपु वंड छँक' यानि पुरुषार्थ करो, प्रभु को स्मरण करो, बाँटकर खाओ।

हम सभी का दायित्व है कि श्री गुरुनानकदेव जी के सन्देश जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, का अपने जीवन में अनुसरण कर उन्हें सर्वदूर प्रसारित करें। स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज को यह आह्वान है कि श्री गुरुनानकदेव जी के 550वें प्रकाशपर्व को परस्पर सहयोग व समन्वय के साथ सभी स्थानों व सभी स्तरों पर बढ़-चढ़कर मनाएँ।

(पृष्ठ ४ का शेष)

वाली फिल्मों व विविध कार्यक्रमों का निर्माण कर परिवार व्यवस्था की जड़ों को मजबूत करते हुए नई पीढ़ी को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने में योगदान करें। प्रतिनिधि सभा सभी सरकारों से भी अनुरोध करती है कि वे शिक्षा-नीति बनाने से लेकर परिवार सम्बंधी कानूनों का निर्माण करते समय परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अपना रचनात्मक योगदान दें।

परिस्थितिजन्य विवशताओं के कारण एकल परिवारों में रहने के लिये बाध्य हो रहे व्यक्ति भी अपने मूल परिवार के साथ सजीव संपर्क रखते हुए निश्चित अंतराल पर कुछ समय सामूहिक रूप से अवश्य बिताएँ। अपने पूर्वजों के स्थान से जुड़ाव रखना अपनी जड़ों के साथ जुड़ने के समान है। इसलिये वहाँ विभिन्न गतिविधियाँ जैसे परिवार सहित एकत्रित होना, सेवा कार्य करना आदि आयोजन करने चाहिए। बालकों में पारिवारिक एवं सामाजिक जुड़ाव निर्माण करने के लिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय परिवेश में रहकर ही कराई जानी चाहिए। अपने निवासक्षेत्र में सामूहिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के द्वारा वृहद परिवार का भाव निर्मित किया जा सकता है। बाल-किशोरों के संतुलित विकास हेतु बालगोकुलम्, संस्कार वर्ग आदि कार्यक्रम करना भी उपयोगी रहेगा।

त्याग, संयम, प्रेम, आत्मीयता, सहयोग व परस्पर पूरकता से युक्त जीवन ही सुखी परिवार की आधारशिला है। इन विशेषताओं से युक्त परिवार ही सभी घटकों के सुखी जीवन को सुनिश्चित करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज विशेषकर युवा पीढ़ी का आवाहन करती है कि अपनी इस अनमोल परिवार व्यवस्था को अधिक से अधिक सजीव, प्राणवान, संस्कारक्षम बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संघ शिक्षा वर्ग-2019

प्रथम वर्ष (सामान्य)	द्वितीय वर्ष (सामान्य)	तृतीय वर्ष (सामान्य)	प्रथम वर्ष (विशेष)	तृतीय वर्ष (विशेष)
अवधि : 15 मई दोपहर 12.00 बजे से 05 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थान :** दिल्ली पब्लिक स्कूल, रायपुर रोड, **सांकरा**, धमतरी (छ.ग.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 24 मई दोपहर 12.00 बजे से 14 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थानः** सरस्वती शिशु मंदिर, खेल परिसर, कोनी, **बिलासपुर** (छ.ग.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 22 मई दोपहर 12.00 बजे से 17 जून सुबह 9.00 बजे तक **स्थान :** डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन, रेशिमबाग, **नागपुर** (महाराष्ट्र) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 19 मई दोपहर 12.00 बजे से 09 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थान :** सरस्वती शिशु मंदिर, केशव नगर, **दमोह** (म.प्र.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 17 नवम्बर दोपहर 12.00 बजे से 12 दिसम्बर सुबह 9.00 बजे तक **स्थान :** डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन, रेशिमबाग, **नागपुर** (महाराष्ट्र) **शुल्क :** 1,000/-

जब गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल हुए थे स्वयंसेवक

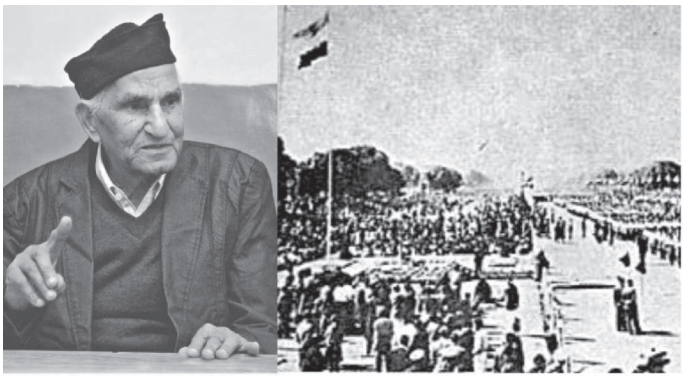

आज भले ही मेरी आयु 87 वर्ष की है, लेकिन 1963 की 26 जनवरी का वह दिन आज भी मुझे ज्यों का त्यों ध्यान है। मुझे याद है, हम जनकपुरी (नई दिल्ली) शाखा के स्वयंसेवकों को जब यह समाचार मिला कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक दस्ता 26 जनवरी की परेड में राजपथ पर भाग लेगा तो एकाएक भीतर से उमंग की लहर उठी। हम सभी स्वयंसेवक इतने उत्साहित हुए कि जैसे जाने क्या मिल गया था। लेकिन इतना तो तय है कि संघ में सब ओर यही चर्चा थी कि नेहरु सरकार ने संघ की राष्ट्र निष्ठा और संकटकाल में देश के साथ खड़े होने के जज्बे का सम्मान किया है।

मुझे याद है कि जनकपुरी शाखा से हम दो स्वयंसेवक जिले के अन्य स्वयंसेवकों के साथ मार्चपास्ट की तैयारी में जुटे थे। मुझे यह तो नहीं पता कि मेरा चयन क्यों किया गया था, पर इतना तो पक्का है कि मेरे अधिकारी ने मेरे अंदर वैसी काबिलियत देखी होगी। पूरी दिल्ली से और भी स्वयंसेवक थे। देश के विभिन्न प्रांतों से स्वयंसेवक दस्ते में शामिल होने के लिए आने वाले थे। हमने पूरी तैयारी अनुशासन और लगन के साथ की थी। जैसा कि चलन है, 26 जनवरी दो दिन पूर्व हमारे दस्ते यानी संघ के दस्ते ने, जिसमें शायद करीब 3200 स्वयंसेवक थे, बाकी परेड के साथ ड्रेस रिहर्सल में भाग लिया था। और फिर 26 जनवरी का दिन आया। हम सभी स्वयंसेवक एकदम चाकचौबंद गणवेश पहने, कदम से कदम मिलाते हुए जब राजपथ पर सलामी मंच के सामने से गुजरे तो दर्शकों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। सीना ताने हम लोग परेड करते हुए इंडिया गेट तक गए। मुझे ध्यान आता है 1962 का वह युद्ध। जैसा हमारा अभ्यास है, हर संकट की घड़ी में हम स्वयंसेवक कंधे से कंधा मिलाकर देशसेवा में जुट जाते हैं, युद्धकाल के दौरान भी हमने जिस मोर्चे से जितना बन पड़ा उतनी सेना की मदद की थी। हमारे साथी स्वयंसेवकों ने अग्रिम मोर्चे पर जाकर हमारे सैनिकों को भोजन में खीर परोसने की ठानी। वे बंकरों के अंदर जाकर जवानों को खीर परोसते थे। एक दिन तो ऐसा हुआ कि स्वयंसेवक खीर के भगोने लेकर पहुंचे तो वहां पर गोलाबारी हो रही थी। लेकिन तय कर लिया था तो जाना ही था। स्वयंसेवक खाई-खंदकों से होते हुए, जमीन पर रेंगते हुए जवानों के बंकरों में पहुंचे और भोजन के वक्त उनके लिए खीर का इंतजाम कर दिया। उस दौर की एक और बात याद आती है। देशभर से जवान रेलगाड़ियों, ट्रकों से मोर्चे की ओर रवाना हो रहे थे। पूरे देश की जनता अपने सैनिकों के साथ खड़ी थी और जहां जितना मौका मिलता, पैसे, भोजन, पानी सबका प्रबंध कर रही थी। हम स्वयंसेवकों में तो अलग ही जोश था। दिल्ली से भले ही हम मोर्चे पर जाकर सैनिकों की सेवा नहीं कर पा रहे थे, लेकिन हमने भी ठान लिया था कि कुछ करेंगे।

हम स्वयंसेवकों ने मोहल्ले से चंदा इकट्ठा किया। उस जमाने में भी 697 रुपये इकट्ठे हो गए थे। हमने खूब सारे फल खरीदे और टोकरों में भरकर नई दिल्ली स्टेशन पहुंच गए। सैनिकों से भरी एक रेलगाड़ी पंजाब की तरफ जा रही थी। हमने डिब्बों में चढ़कर सैनिकों से फल लेने का अनुरोध किया तो उन्होंने पलटकर कहा— 'अरे भाई, आप लोगों ने इतना भोजन और फल दे दिये हैं कि अब तो इन्हें रखने की जगह भी नहीं है। बेहतर होगा आप इन्हें और जरुरतमंदों में बांट दें।' युद्ध के समय ऐसा था देश का माहौल। मुझे याद है स्वयंसेवक और सभी विविध संगठन अपनी तरफ से सरकार का सहयोग कर रहे थे।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

विश्व शान्ति ब्रह्मयज्ञ वार्षिक महिमा मेला

गौसेवा से समृद्ध स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए अलख जगाते उदयनाथ बाबा

गरियाबंद (काण्डसर)। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्वशांति ब्रह्मयज्ञ का आयोजन कर गौ सेवा के प्रति समाज को जगाने एवं प्रेरित करने का कार्य महाशक्ति सागर आश्रम काण्डसर से किया गया। कार्यक्रम में इस वर्ष मुख्य अतिथि चुहा, केंचुआ एवं बिच्छु रहे। प्रत्येक वर्ष मुख्य अतिथि के रुप में विभिन्न जीवों को स्थान दिया जाता है, जिनका प्रकृति संतुलन में विशेष स्थान है। कार्यक्रम का प्रारंभ 14-3-2019 को काण्डसर आश्रम से दो गायें सुशिला एवं चंचला का श्रृंगार एवं पूजन के पश्चात् ग्राम भ्रमण के लिए निकाला गया। पांच दिवस तक विभिन्न ग्रामों तक पहुंच कर **गौ सेवा से राष्ट्र सेवा** की महत्ता को बताते हुए ग्रामीणों को प्रेरित किया एवं रात्रि विश्राम स्थल पर गौकथा का आयोजन किया गया। इस प्रकार पांच दिवस में क्षेत्र के लगभग 30-35 ग्रामों में पहुंच कर गौ सेवा के प्रति जन जागरण का कार्य किया गया। कार्यक्रम के पाँचवें दिवस में 18-3-2019 को आश्रम से लगभग 2 कि.मी. से गायों का स्वागत पूजा अर्चना करते हुए श्वेत वस्त्र से मार्ग बिछाकर उस पर उन्हें चलाते हुए आश्रम स्थल तक लाया गया। 19-3-2019 को ब्रह्म मुहूर्त में दीप प्रज्वलित कर तथा धुनी की स्थापना कर यज्ञ प्रारंभ किया गया एवं दिन में सत्संग विभिन्न जीवों का हमारे पर्यावरण में महत्व बताते हुए रात्रिकाल में कथा श्रवण का आयोजन रखा गया। दिनांक 20-3-2019 को भी पूर्व दिवस की भांति ही यज्ञ, सत्संग, प्रकृति से सामंजस्य, उनका महत्व एवं कथा श्रवण नियत काल में किया गया।

कार्यक्रम का समापन दिनांक 21-3-2019 को यज्ञ पूर्णाहुति, गोपूजन एवं महाप्रसाद वितरण के साथ किया गया।

ज्ञात हो कि श्री उदयनाथ बाबा ने **केरल बीफ प्रकरण** का विरोध करते हुए हजारों ग्रामीणों को लेकर एस.डी.एम. कार्यालय का घेराव कर प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति भारत सरकार के नाम ज्ञापन सौंपा था। इस प्रकार समय-समय पर विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कृषि मेला आदि का आयोजन कर जन चेतना, जन जागृति का कार्य श्री उदयनाथ जी बाबा कर रहे हैं तथा स्वस्थ समाज निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं।

(पृष्ठ ८ का शेष)

भारतीय मजदूर संघ ने भी अपने सभी आन्दोलन स्थगित कर रखे थे और सरकार को कह रखा था कि हम आपके साथ हैं। आज जब बाल स्वयंसेवकों को शाखा में खेलते देखता हूं तो वे पुरानी स्मृतियां मानस पटल पर उभर आती हैं। स्वयंसेवक यह न भूलें कि हमारा कार्य है देशहित की चिंता करना, हमारे लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

अपने इस स्वयंसेवकत्व को नहीं भूलना है। मैं जितना होता है, संगठन के लिए सक्रिय रहता हूँ। भारतीय मजदूर संघ की मासिक पत्रिका विश्वकर्मा संकेत का संपादन करता हूं। सुबह से शाम तक अपने को व्यस्त रखता हूं और संघ कार्य में मस्त रहता हूँ।

87 वर्षीय के.एल. पठेला 26 जनवरी, 1963 को राजपथ पर परेड में शामिल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दस्ते का हिस्सा थे।

वर्ष प्रतिपदा से 'श्रीराम जय राम जय जय राम' विजय मंत्र का जाप

प्रयागराज। विश्व हिन्दू परिषद की धर्मसंसद में नववर्ष के प्रथम दिन वर्ष प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) से धर्म जागरण अभियान चलाने का प्रस्ताव पारित हुआ। वर्ष प्रतिपदा पर आनन्द संवत्सर प्रारंभ हो रहा है। धर्म जागरण अभियान के तहत् पूरे देश में वर्ष प्रतिपदा से 'श्रीराम जय राम जय जय राम' विजय मंत्र का जाप किया जाएगा। संत समाज ने सभी रामभक्तों को आवाहन किया है कि, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 06 अप्रैल को सूर्योदय से ही 13 करोड़ विजय मंत्र 'श्रीराम जय राम जय जय राम' का जाप करें।

राम मंदिर वहीं बनेगा जहां राम का जन्म हुआ- आलोककुमार : विश्व हिन्दू परिषद की धर्म संसद में विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष आलोककुमार ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर वहीं बनेगा जहां राम का जन्म हुआ, उन्हीं शिलाओं और ईटों से बनेगा जो पूजित हुई हैं और उसी मॉडल पर बनेगा जो देशभर के घरों में पूजित हुआ है। कुंभ मेला क्षेत्र में विहिप के शिविर में चल रही धर्म संसद को संबोधित करते हुए आलोककुमार ने कहा कि, जो शक्तियाँ कई पीढ़ियों तक शत्रु थीं, अब वे संधि करके हिन्दुओं के खिलाफ षड्यंत्र कर रही है।

उन्होंने कहा, 'हमारी 42 एकड़ राम जन्मभूमि न्यास की है और न्यास के अध्यक्ष ने जब सरकार को पत्र लिखकर इसे लौटाने की मांग की तो प्रधानमंत्री ने इस पत्र के भेजे जाने के 15 दिन के भीतर त्वरित कार्रवाई करके उच्चतम न्यायालय में इसके लिए अर्जी दी और भूमि लौटाने की अनुमति मांगी।'

मन की आँखों से किया सुन्दरकाण्ड का पाठ

कोरिया। ईश्वर की आराधना के लिए जरुरी नहीं कि हमारी आंखे हो। बिना आंखों के भी हम ईश्वर का ध्यान, उसकी उपासना कर सकते है। यह बात कोरिया जिले के मनेन्द्रगढ़ में संचालित नेत्रहीन विद्यालय में साफ देखी जा सकती है। इस विद्यालय के 50 से भी अधिक दिव्यांग बच्चे ब्रेललिपि से बनी रामायण का इस प्रकार पाठ करते है जिसे सुनकर हर कोई दांतों तले उंगली दबाने के लिए मजबूर हो जाता है। मनेन्द्रगढ़ के आमाखेरवा इलाके में बीते कई वर्षों से नेत्रहीन विद्यालय का संचालन किया जा रहा है। इस विद्यालय में छत्तीसगढ़ के साथ ही साथ मध्यप्रदेश के कई जिलों के दिव्यांग बच्चे पढ़ाई करते हें। पढ़ाई के साथ ही साथ बच्चों को संस्कारित करने के लिए इस विद्यालय में कई सामाजिक व धार्मिक आयोजन भी समय-समय पर किए जाते हैं। इन आयोजनों में दिव्यांग बच्चे पूरे उत्साह के साथ शामिल होते हैं।

कोरे कागज की तरह रामचरित मानस

इन आयोजनों में प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को होने वाला रामचरित मानस का पाठ अपने आप में अनूठा होता है। जब ये दिव्यांग बच्चे समूह में बैठकर सुंदरकांड का पाठ करते है तो ऐसा लगता है कि कोरे कागजों पर ये बच्चे अपनी उंगलियां फेर रहे हों, लेकिन हकीकत में वे कोरे कागज नहीं होते वरन् उनमें ब्रेल लिपि में वे श्री रामचरित मानस की चौपाइयां अंकित होती हैं, जिन्हें बच्चे अपनी उंगलियों के सहारे तेजी से पढ़ते हैं।

मन की आंखों से करते है अनुभव

रामायण को इतनी तेजी से पढ़ने के लिए बच्चों को काफी प्रयास करना पड़ता है और उसके बाद ये दिव्यांग उसे साफ-साफ पढ़ पाते हैं। इन दिव्यांग बच्चों का मानना है कि, भले ही ईश्वर ने उन्हें आंखे न दी हो, लेकिन आम इंसान की तरह उनमें भी अपने ईश्वर, अपने देश, अपने समाज के प्रति सोचने समझने की क्षमता है। ईश्वर का अनुभव करने के लिए भले ही हमारे पास भौतिक रुप से आंखे नहीं हैं, लेकिन हम उन्हें अपने मन की आंखों से जरुर अनुभव करते हैं।

देश में हो रहे है अनुकरणीय कार्य : डॉ. वैद्य

वैचारिक कुंभों का सफल प्रयोग :

संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन जी वैद्य ने चर्चा के दौरान बताया कि इस वर्ष उत्तरप्रदेश सरकार और विभिन्न पीठों के सहयोग से प्रयागराज कुंभ में (वैचारिक कुंभ के माध्यम से) कई नए प्रयोग किए गए, जो काफी सफल रहे। इनमें युवा कुंभ, मातृशक्ति कुंभ, समरसता कुंभ, पर्यावरण कुंभ एवं सर्वसमावेशी कुंभ वैचारिक आदान-प्रदान की दृष्टि से बहुत प्रभावी साबित हुए हैं। इस वर्ष सक्षम के माध्यम से शारीरिक, मानसिक रूप से अक्षम लोगों के लिए विभिन्न आयोजन किए गए। जिनमें नेत्र कुंभ के दौरान 800 से ज्यादा विशेषज्ञों ने 2 लाख से अधिक लोगों का परीक्षण कर रिकॉर्ड बनाया। साथ ही डेढ लाख लोगों को नि:शुल्क चश्में उपलब्ध कराए गए।

सामाजिक परिवर्तन एवं समरसता पर फोकस :

डॉ. वैद्य ने बताया कि कार्य में गुणवत्ता एवं कार्य विस्तार की दृष्टि से संघ के छ: सहसरकार्यवाह 43 प्रांतों में जिलास्तर पर 12 हजार कार्यकर्ताओं की बैठकें ले चुके हैं। सन् 1990 के बाद समाज के बीच पहुँच बढ़ाने के लिए सेवा प्रकल्प और कार्य पर केन्द्रित कार्यपद्धति के माध्यम से 300 विकसित गांवों को प्रभात गांव की श्रेणी में कार्य चल रहा है। वहीं 1 हजार गांव ऐसे हैं जहां कार्य प्रारंभ हो चुका है।

गौ संरक्षण एवं कुटुम्ब प्रबोधन :

संघ की कार्ययोजना में भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण और संवर्धन के लिए गौ-उत्पादों के प्रचार-प्रसार पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही लोग अपने परिवार के बीच अधिक समय बिताएं, इसके लिए कुटुम्ब प्रबोधन के द्वारा काम चल रहा है।

पर्यावरण संरक्षण, जल संधारण :

एक नई गतिविधि को अपने कार्य योजना में शामिल करते हुए पर्यावरण संरक्षण और जल प्रबंधन करने के लिए समाज को जागरूक करने का काम किया जा रहा है।

युवाओं में तेजी से बढ़ी संघ से जुड़ने की रूचि :

- संघ शाखाओं में बाल एवं महाविद्यालयीन स्वयंसेवकों की भागीदारी 62 प्रतिशत।
- हर साल 14 से 40 साल तक के 1 लाख युवाओं को प्रशिक्षण।
- सालभर में 20 से 35 साल के एक लाख से अधिक युवा संघ से जुड़े।

संघ कार्य विस्तार :

- देशभर में खण्ड स्तर पर 63,367 शाखाओं के माध्यम से 88 प्रतिशत खण्डों तक पहुँच।
- 54,472 मंडलों तक संघ कार्य का विस्तार।
- संघ की दैनिक शाखाओं की संख्या 59,266 पर पहुँच चुकी हैं।

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके समाज पर निर्भर करता है - अरुण कुमार

नालागढ़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार जी ने कहा कि गणतंत्र दिवस का संदेश, हमारा कर्तव्य, त्याग, संघर्ष, इतिहास की याद कराने वाला है। प्रत्येक वर्ष संघ के 80 वर्ग लगते हैं। इन वर्गों में लगभग 25000 शिक्षार्थी भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त संघ के 1000 प्राथमिक शिक्षा वर्ग प्रतिवर्ष लगते हैं। जिनमें एक लाख के लगभग स्वयंसेवक प्रशिक्षण लेते हैं। शिक्षण लेने के पश्चात् स्वयंसेवक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा कार्य करते हैं। संघ का विचार— 1. भारत एक राष्ट्र है, 2. प्राचीन राष्ट्र है और 3. हिन्दू राष्ट्र है। मेगास्थनीज, अलबरुनी व अंग्रेजों ने भी विविधता होते हुए भी एक जीवन दर्शन का चिंतन रहा, ऐसा कहा है। कोई भी महापुरुष कहीं भी जन्मा हो, उनको संपूर्ण देश का मानते हैं। श्री गुरुगोविंद सिंह जी के समय पंज प्यारे देश के विभिन्न भागों से चुने गए, किसी एक स्थान के नहीं थे। जगद्गुरु शंकराचार्य ने पूरे राष्ट्र को उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम में चार मठों की स्थापना कर राष्ट्र के रुप में पिरोया।

उन्होंने कहा कि भारत को राष्ट्र न मानने वाले लोग भी यहां हैं। भारतीय संस्कृति एक विशेष संस्कृति है। मजहब के आधार पर राष्ट्र नहीं बनते। भारत का अतीत गौरवशाली रहा है। शिक्षा में भी अपना देश अग्रणी रहा है। समाज व देश के लिए देशभक्ति, संगठन, अनुशासन व स्वाभिमान के आधार पर परिवर्तन आएगा। किसी राष्ट्र का भविष्य उसके समाज पर निर्भर करता है। संघ कोई बड़ा संगठन खड़ा नहीं करना चाहता, वह तो देश को संगठित करना चाहता है। उन्होंने डॉ. भीमराव आम्बेडकर के समरसता व बन्धुता के बारे में संविधान में लिखने के विषय में भी बताया।

अरुण कुमार जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रदेश के संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष (सामान्य) के समारोप कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रदेश का बीस दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष (सामान्य) नालागढ़ के अवस्थी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट में 06 जनवरी से प्रारम्भ होकर 26 जनवरी को समाप्त हुआ। वर्ग में हिमाचल, पंजाब, दिल्ली, जम्मू कश्मीर व हरियाणा से 361 शिक्षार्थी, 70 प्रबन्धक व 49 शिक्षकों सहित 480 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष सुबोध गुप्ता ने कहा कि मैं गर्व का अनुभव कर रहा हूं कि विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संस्था के कार्यक्रम में उपस्थित हुआ हूँ।

राष्ट्र सेविका समिति शिक्षा वर्ग

प्रारंभिक वर्ग	प्रवेश/प्रबोध वर्ग
1. दुर्ग विभाग : स्थान-**बेमेतरा** 26 अप्रैल से 01 मई 2. रायपुर विभाग : स्थान-**रायपुर** 01 जून से 06 जून 3. सरगुजा विभाग : स्थान-**शंकरगढ़** 25 अप्रैल से 30 अप्रैल शुल्क: 200/-	**अवधि :** 10 मई दोपहर से 25 मई दोपहर तक **स्थान :** सेवा भरती छात्रावास, तिफरा, **बिलासपुर** (छ.ग.) **शुल्क :** 300/-

असीमानंद सहित चारों आरोपी दोषमुक्त

भगवा आतंक का शोर मचाने वालों के मुंह पर तमाचा

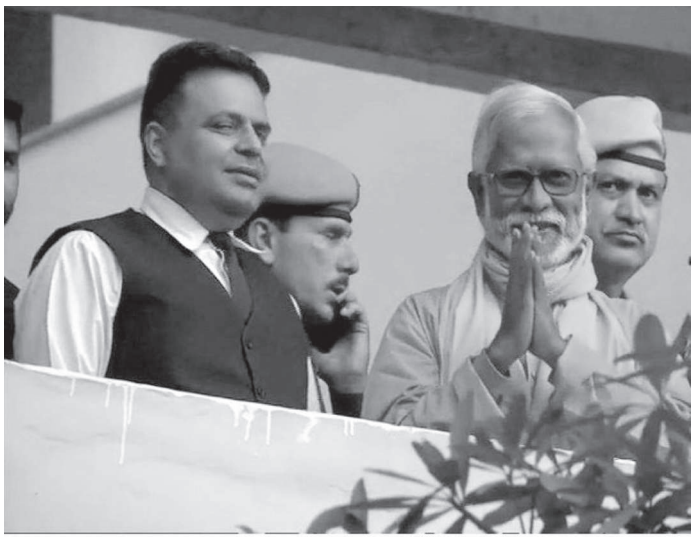

नई दिल्ली। समझौता ब्लास्ट केस के मामले में राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) की विशेष अदालत ने फैसला सुना दिया। अदालत ने मामले में चार आरोपियों को बरी कर दिया है। हिन्दू आतंकवाद, भगवा आतंकवाद का शोर मचाने वालों की सच्चाई सबके सामने आ गई है। यूपीए सरकार द्वारा संघ और अन्य राष्ट्रीय संगठनों को बदनाम व फंसाने के प्रयास भी विफल हुए हैं।

18 फरवरी, 2007 को समझौता एक्सप्रेस में हुए इस धमाके में 68 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें मुख्यत: पाकिस्तानी नागरिक थे। तत्कालीन यूपीए सरकार और जाँच एजेंसियों, विशेषकर कांग्रेस नेताओं ने 'हिन्दू आतंकवाद' का नया शगूफा छोड़ा था। हिन्दू संगठनों पर यह धमाका करने का आरोप लगाया था। एनआइए की विशेष अदालत ने स्वामी असीमानंद सहित चारों आरोपियों को इस मामले में बरी कर दिया है।

2011 से मामले की जाँच कर रही राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआइए) ने अदालत में यह आरोप लगाया कि गुजरात के अक्षरधाम, जम्मू के रघुनाथ, एवं वाराणसी के संकट मोचन मंदिर में हुए आतंकी हमलों का बदला लेने के लिए आरोपियों लोकेश शर्मा, कमल चौहान, राजिंदर चौधरी ने समझौता एक्सप्रेस में धमाके को अंजाम दिया। स्वामी असीमानंद पर मामले में शामिल व्यक्तियों को साजिश हेतु आवश्यक सामग्री मुहैया कराने (logistical support) का आरोप था। पर, एनआइए कोर्ट के जज जगदीप सिंह के फैसले के अनुसार उन्हें यह थ्योरी और जाँच एजेंसी द्वारा पेश सबूत इतने ठोस नहीं लगे कि उनके आधार पर आरोपियों को दोषी करार दिया जा सके। उन्होंने एक पाकिस्तानी महिला द्वारा पाकिस्तानी गवाहों को पेश करने की याचिका को भी खारिज कर दिया।

इस मामले के मास्टरमाइंड के तौर पर प्रचारित आरएसएस सदस्य सुनील जोशी की 2007 में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उस मामले को भी इसी भगवा आतंकवाद नैरेटिव से जोड़ कर देखा गया था। जाँच एजेंसियों ने साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर समेत 8 लोगों को इस मामले में भी आरोपी बनाया था पर बाद में उनके खिलाफ भी एनआइए दोष साबित करने लायक सबूत पेश करने में असफल रही थी।

(पृष्ठ ३ का शेष)

मतदान के लिए हम प्रयास करेंगे। पिछले वर्षों में समाज की सूझबूझ बढ़ी है और जागृत समाज देशहित में मतदान करेगा। आज सामान्य समाज ये सोचने की स्थिति में आ गया है कि देशहित में कौन काम करेगा।

जल्लीकट्टू, सबरीमाला, दीपावली, हिन्दू परंपराओं को लेकर न्यायालयों के निर्णयों से संबंधित प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि समाज जीवन संविधान के साथ-साथ परंपरा, संस्कृति और मान्यताओं से चलता है। इस प्रकार के मामलों में समाज के प्रबुद्धजनों का मार्गदर्शन लेना चाहिए। कानून के तहत निर्णय देना एक अलग बात है और समाज में उसकी स्वीकार्यता होना एक अलग बात है। समाज हित में जीवन मूल्यों और संस्कृति के प्रकाश में ऐसे मामलों का समाधान होना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी आसन

मन को ठीक करने के लिए यौगिक क्रियाएं जैसे पद्मासन, वज्रासन, शीर्षासन, सर्वांगासन, हलासन, भुजंगासन, जानुशिरासन, त्रिकोणासन तथा उष्ट्रासन आदि उपयोगी हैं। इसके अलावा नाड़ी शोधन, उज्जायी प्राणायाम एवं ध्यान का नियमित अभ्यास तन व मन दोनों के लिए उपयोगी है। योग का नियमित अभ्यास स्मरणशक्ति को बढ़ाता है। याददाश्त क्षमता दुरुस्त रखता है। साथ ही रक्त संचालन व पाचन क्षमता में वृद्धि, नसों व मांसपेशियों में पर्याप्त खिंचाव उत्पन्न करने के अलावा योग से मस्तिष्क को शुद्ध रक्त मिलता है। इसके लिए खासतौर पर सूर्य नमस्कार, शीर्षासन, पश्मिोत्तानासन, उष्ट्रासन व अर्धमत्स्येन्द्र आसन आदि करने चाहिए।

योगनिद्रा : यह मानसिक तनाव और भावनात्मक असंतुलन को दूर करने में मददगार है। योगनिद्रा व शिथलीकरण के प्रतिदिन 10 मिनट के अभ्यास से रोजमर्रा के तनाव चेतन तथा अवचेतन मन से हट जाते हैं।

सर्वांगासन : पीठ के बल जमीन पर लेट जाएं। दोनों पैरों को जमीन से ऊपर उठा कर हल्के झटके से नितम्ब को भी जमीन से ऊपर उठाएं। कमर पर हाथों का सहारा देते हुए गर्दन के नीचे का सारा भाग जमीन से ऊपर उठा कर एक सीधी रेखा में करें। अंतिम स्थिति में पूरा शरीर गर्दन से 90 डिग्री पर ऊपर उठता है। सर्वांगासन की इस स्थिति में आरामदायक समय तक रुकें। इसके बाद वापस पूर्व स्थिति में आएं। स्मरण शक्ति को कमजोर होने से रोकने, उसे बढ़ाने व मस्तिष्क तक शुद्ध रक्त व ऑक्सीजन का संचार करने में इसकी भूमिका अहम है।

इस माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

मूंग :

- इस समय मूंग की फसल में 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- मूंग की फलियां यदि हल्के भूरे रंग की हो गयी हैं तो समझें की फसल पक कर तैयार है।

गेहूँ :

- अनाज के भण्डारण से पहले गेहूँ को अच्छी तरह सुखा लें जिससे उसमें नमी बाकी ना रहे।

सब्जियाँ :

- भिण्डी व टमाटर की फसल को छेदक सूंडी के प्रकोप से बचाने के लिए 0.1 प्रतिशत टोपास या कैलिक्सिन (400-500 मि.लि./1000 लिटर पानी के हिसाब से) का छिड़काव खड़ी फसल में कर दें।
- फल मक्खी के नियंत्रण के लिए मिथाइल यूजिनोल के फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग करें।

कद्दू वर्गीय फसलें :

- कद्दू वर्गीय फसलों में कीट नियंत्रण के लिए यलो स्टिकी ट्रैप, 20 से 25 प्रति हैक्टेयर के हिसाब से लगाएँ।
- कद्दू एवं चप्पन कद्दू में फल आने पर 1 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- खरपतवार से बचाव के लिए निराई गुड़ाई करें।
- तापमान बढ़ने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- यदि बेल बढ़ गयी है तो सहारा लगा दें एवं मचान बना दें।

फल वाली फसलें :

- आम के पेड़ों में इस समय फल गिरने लगता है। इसके बचव के लिए 20 पी.पी.एम. की दर से नैफथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- आम, अंगूर व अमरूद के बाग में जिंक, कॉपर, मैंगनीज, लोहा व बोरॉन के सूक्ष्म पोषक तत्वों का स्प्रे करें।
- यदि पेड़ों पर दीमक का प्रकोप दिखाई देता है तो 0.2 प्रतिशत क्लोरोपायरीफॉस का छिड़काव कर दें।

आदर्श राजनैतिक व्यक्तित्व का अंत

गोमंतक के मा. पूर्व संघचालक, गोवा के वर्तमान मुख्यमंत्री तथा भारत के पूर्व रक्षा मंत्री आदि विभिन्न पद जिनके अस्तित्व से गौरवान्वित हुए, ऐसे अध्ययनशील, ध्येयनिष्ठ, कर्मशील व समर्पित व्यक्तित्व के धनी श्री मनोहर पर्रिकर जीवन के संघर्ष में मात देने में दुर्दैव से असफ ल हुए। ईश्वरीय शक्ति का यह आघात है। वाणी-शब्द मौन हुए हैं।

गोवा के संघ कार्य की धुन हो या गोवावासी जनसामान्यों के विकास का ध्येय हो, समान निष्ठा से सर्वस्व न्यौछावर करने वाला व्यक्तित्व, मनोहर पर्रिकर के रूप में हम सबके बीच में था।

देश की आवश्यकता ध्यान में रखते हुए अति सरलता से रक्षा मंत्रालय का दायित्व स्वीकारा तथा देश की रक्षा व्यवस्था को दिशा और आकार देने का कर्तृत्व सिद्ध किया।

अति निरलस, अध्ययनशील, दृढ संकल्पित व कर्मशील तथा समाज और देशहित के सिवा अन्य विचारों को जीवन में स्थान नहीं, ऐसा दुर्लभ व्यक्तित्व श्री मनोहर पर्रिकर जी का रहा।

भारत माता का श्रेष्ठ सुपुत्र आज हमने खोया है।

एक आदर्श सामाजिक, राजनैतिक कार्यकर्ता व ध्येय समर्पित स्वयंसेवक रूप में वे सदा स्मरण में रहेंगे।

हम-आप सब परिवारजन, स्नेही, सहकारी बंधुओं को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें व दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो, यही ईश्वर चरण में प्रार्थना।

विनम्र श्रद्धांजलि!

मोहन भागवत, सरसंघचालक
सुरेश (भैया) जोशी, सरकार्यवाह

हमारे बीच नहीं रहें दामोदर जी नामदेव

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहें दामोदर जी नामदेव का गत 12 मार्च को हृदयाघात से निधन हो गया हैं।

वे बस्तर जैसे सुदूर अंचल में विभाग प्रचारक रहे और संघकार्य को बढ़ाने में उनकी बड़ी भूमिका रही। बाद में वे विश्व हिन्दू परिषद छत्तीसगढ़ प्रान्त के संगठन मंत्री के नाते अपने दायित्व का निर्वहन किया। तत्पश्चात वे मध्यप्रदेश चले गए।

दामोदर जी नामदेव ने संघकार्य को बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनके सान्निध्य में आए अनेक स्वयंसेवक आज समाज जीवन के विभिन्न दायित्वों का निर्वाह कर रहें हैं। उनके परिश्रमी व मिलनसार स्वभाव से कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलती थी। असामयिक हृदयाघात से निधन होने का समाचार उनके परिचितों के लिए अत्यंत पीड़ादायक रहा। उन्होंने अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया। मां भारती की सेवा में ही जीवन के अंतिम क्षणों तक वे सक्रिय रहे।

हम-आप सब परिचित, परिवार, स्नेही, और सहकारी बंधुओं को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें व दिवंगत आत्मा को सदगति प्राप्त हो, यही ईश्वर चरणों में प्रार्थना हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

उनके घर का पता : उमाशंकर नामदेव,
सी-114/1, विद्या पैलेस कॉलोनी, केशव विद्यापीठ के पास, छोटा बांगडदा, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
संपर्क नं.: 7987522090, 8866099571, 9867725546

मानस प्रसंग **गतांक से आगे —**

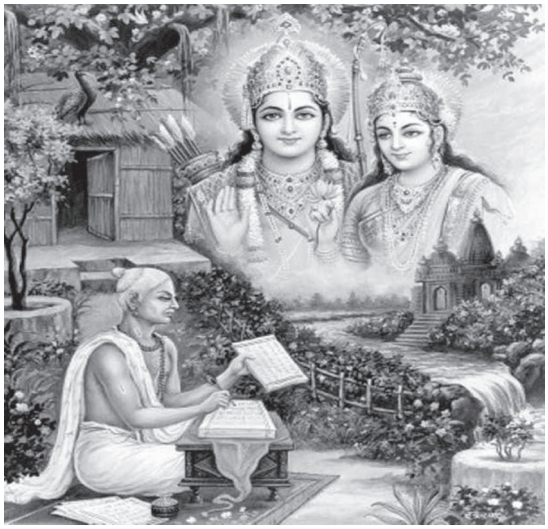

गोस्वामी तुलसीदास जी आगे लिखते हैं कि, जब शंकर जी ने माता सती की मृत्यु होने का समाचार सुना तो क्रोध में आकर वीरभद्र को भेजा, जिन्होंने वहाँ जाकर यज्ञ का विध्वंस कर डाला और उपस्थित सभी देवताओं को यथोचित फल दिया। दक्ष की वहीं जगत में प्रसिद्ध गति हुई जो शिव के द्रोहियों की हुआ करती है। गोस्वामी जी लिखते है कि, यह इतिहास सारा संसार जानता है, इसलिए मैंने यहाँ संक्षेप में ही लिखा है। वे आगे लिखते हैं—

सतीं मरत हरि सन बरु मागा। जनम जनम सिव पद अनुरागा॥
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई। जनमीं पारबती तनु पाई॥

अर्थात् माता सती ने देह छोड़ते समय भगवान विष्णु से वरदान मांगा कि मेरा अनुराग जन्म-जन्म में शिवजी के चरणों में ही बना रहे, इसलिए उनका जन्म हिमाचल के घर में पार्वती के रुप में हुआ। गोस्वामी जी आगे लिखते हैं—

जब तें उमा सैल गृह जाईं। सकल सिद्धि संपति तहँ छाईं॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे। उचित बास हिम भूधर दीन्हे॥

अर्थात् जब से उमा जी हिमाचल के घर जन्मी तब से सभी सिद्धियों और संपत्तियाँ वहाँ छा गयी। मुनिगण जहाँ-तहाँ सुन्दर आश्रम बनाकर रहने लगे और हिमाचल ने सबको उचित स्थान दिए। उस सुन्दर पर्वत पर सभी नए-नए वृक्ष सदैव फल-फूल से संपन्न रहने लगे तथा कई प्रकार की मणियों की खदानें प्रकट हो गई। सारी नदियों में पवित्र जल बहने लगा और पशु-पक्षी, भ्रमर आदि सब सुखी रहने लगे। सभी जीवधारियों ने आपसी स्वाभाविक बैर छोड़ दिया और पर्वत पर सभी परस्पर प्रेम से रहने लगे। गोस्वामी जी आगे लिखते हैं—

सोह सैल गिरिजा गृह आएँ। जिमि जनु रामभगति के पाएँ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू॥

अर्थात् माता पार्वती जी के घर आ जाने से पर्वत वैसा ही शोभायान हो रहा है जैसा रामभक्ति को पाकर भक्त शोभायमान होता है। उसके घर नित्य नए-नए उत्सव होते हैं, जिसका यश ब्रह्मादि गाते है। गोस्वामी जी आगे लिखते है, कि जब नारद जी ने ये सब समाचार सुने तो वे हिमाचल के घर आए। पर्वत ने उनका आदर-सत्कार किया और चरण धोकर उनको उत्तम आसन दिया। सपत्निक मुनि के चरणों में सिर नवा कर चरणोदक को सारे घर में छिड़कवाया तथा अपना सौभाग्य बताते हुए पुत्री को बुलाकर उनके चरणों में डाल कर विनय किया।

त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि॥

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

लोकतंत्र के इस महापर्व पर वोट करें

लोकसभा निर्वाचन 2019
लोकतंत्र का महापर्व

चुनाव 2019 - मेरी भूमिका

यह चुनाव केवल राजनैतिक सत्ता प्राप्ति का चुनाव नहीं हैं, अपितु देश की संस्कृति और हिन्दुत्व की दिशा–दशा निश्चित करनेवाला हैं ।

लोकतंत्र के इस महापर्व पर देशहित को ध्यान में रखते हुए शत–प्रतिशत मतदान कर अपनी प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करें।

अपना बहुमूल्य मतदान इसलिए करें

विनीत, डॉ. राजेन्द्र दुबे, संयोजक, राष्ट्रीय सुरक्षा मंच, रायपुर, छत्तीसगढ़ ।

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

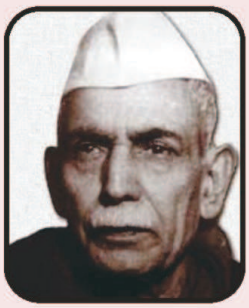

पं. माखनलाल चतुर्वेदी
जयंती ०४ अप्रैल

जगजीवन राम
जयंती ०५ अप्रैल

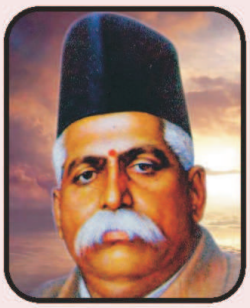

डॉ. हेडगेवार जयंती
चैत्र शु. ०१, ०६ अप्रैल

मंगल पांडे
बलिदान दिवस ०८ अप्रैल

ले. कर्नल धनसिंह थापा
जयंती १० अप्रैल

महात्मा ज्योतिबा फुले
जयंती ११ अप्रैल

राणा सांगा
जयंती १२ अप्रैल

डॉ. भीमराव आम्बेडकर
जयंती १४ अप्रैल

तात्या टोपे
बलिदान दिवस १८ अप्रैल

वल्लभाचार्य जयंती
वैशाख कृ. ११, ३० अप्रैल

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - अप्रैल २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427